International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 11-01-2019; Accepted: 16-02-2019
www.advancedjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 89-91

भारत के आर्थिक विकास में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की भुमिका : मध्यप्रदेश राज्य के विशेष संदर्भ में

डॉ० अंजली पाण्डेय [1], तारा त्रिवेदी [2]

[1] सहायक प्राध्यापक (दे.अ.वि.वि.– मातेश्वरी सुगनीदेवी कन्या महाविद्यालय), मध्य प्रदेश, भारत।

[2] शेधार्थी (पी. एम. बी. गुजराती वाणिज्य महाविद्यालय), इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

भारतीय अर्थव्यवस्था एक अल्प – विकसित अर्थव्यवस्था हैं। इसे विकसित बनाने में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। लघु उद्योगों द्वारा देश के आर्थिक विकास के साथ औद्योगिक विकास भी संभव हैं। इन उद्योगों द्वारा देश में विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि हुई हैं। तथा सकल घरेलु उत्पाद में भी इसका महत्वपूर्ण स्थान हैं। प्राचिन समय से ही भारत में लघु उद्योगों द्वारा अनेक वस्तुओं का उत्पादन किया जाता हैं। इन वस्तुओं का भारत में ही नही, अपितु विदेशों में भी निर्यात किया जाता हैं। उद्योगों को पूंजी पर आधारित अनेक वर्गो में विभाजित किया गया हैं। जैसे :– लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, ग्रह उद्योग, वृहद उद्योग आदि। वर्तमान में वृहद उद्योगो की ही तरह लघु उद्योगो ने अपना वर्चस्व बनाए रखा हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन करने में द्वितीयक समंको का प्रयोग किया गया हैं।

मूल शब्द : भारतीय अर्थव्यवस्था, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग, रोजगार सृजन, निर्यात संवर्द्धन।

प्रस्तावना

भारत एक विकासशील देश हैं। यहॉ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती हैं। कृषि के पश्चात् लघु उद्योग ही हैं, जिस पर भारत की अधिकांश जनसंख्या आश्रित हैं। भारत में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता हैं। उनका समुचित उपयोग देश के आर्थिक विकास में चार चॉद लगा सकता हैं। प्राकृतिक संसाधनों का देश के आर्थिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान हैं। इनके समुचित दोहन से देश का तीव्र गति से विकास होगा। किसी भी देश के अर्थव्यवस्था के स्वरुप को समझने में औद्योगिक ढॉचे का महत्वपूर्ण स्थान हैं। भारत की अर्थव्यवस्था के स्वरुप को समझने हेतु भी इसकी आवश्यकता होती हैं। अतः औद्योगिक ढॉचे को समझने हेतु दो भागों में उद्योगों को बांटा गया हैं।

1. वृहद उद्योग
2. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग

वृहद एवं लघु उद्योगों का विभाजन विनियोजित पूंजी, यांत्रिक शक्ति, तथा श्रमिकों की संख्या आदि के आधार पर किया जा सकता हैं।

1. **वृहद उद्योगः** जिन उद्योगों का निर्माण अधिक मात्रा में पूंजी विनियोजन, श्रमिकों की अधिक संख्या तथा मशीनों व उपकरणों का अत्यधिक उपयोग होता हैं, वे उद्योग वृहद श्रेणी के उद्योग के अंतर्गत शामिल किए जाते हैं। इसके अंतर्गत वस्त्र उद्योग, लोहा व इस्पात उद्योग, जूट उद्योग, चीनी उद्योग, सीमेंट उद्योग, इंजीनियरिंग उद्योग शामिल किए जाते हैं।
2. **सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगः** इन उद्योग के अंतर्गत ऐसी वस्तुओं के उत्पादन का कार्य सम्मिलित किया जाता हैं, जहॉ पूंजी का कम से कम विनियोजन किया जाता हैं। श्रमिको की संख्या भी कम होती हैं, तथा मशीनें व उपकरण भी नही के बराबर उपयोग में लाए जाते हैं। लधु उद्योग देश की अर्थव्यवस्था में मुख्य भुमिका अदा करता हैं। ये उद्योग कम से कम पूंजी निवेश की सहायता से अधिक से अधिक लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध करातें हैं।

उद्योगों का वर्गीकरण

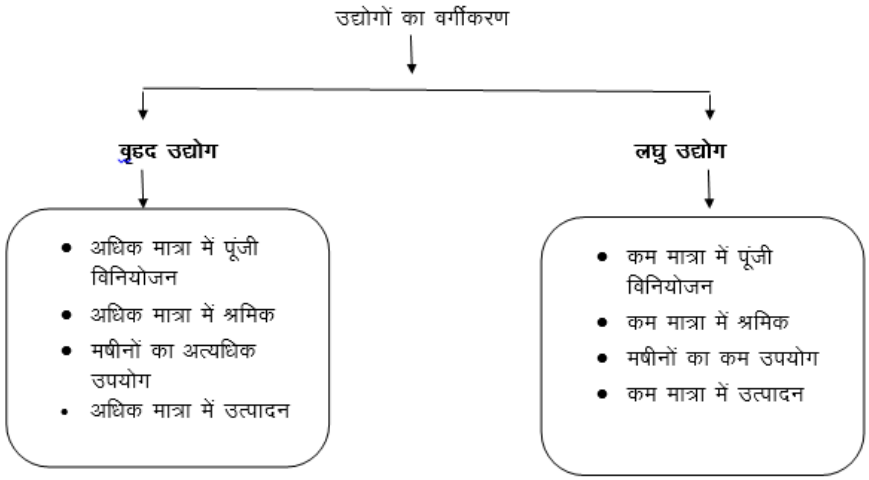

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की स्थितीः मध्यप्रदेश राज्य में पिछले 10 वर्षो में स्थापित सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की संख्या को तालिका में इस प्रकार दर्शाया गया हैः–

तालिका 1: मध्यप्रदेश में स्थापित सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों की संख्या

वर्ष	सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों की संख्या
2007–08	18582
2008–09	20920
2009–10	19721
2010–11	19856
2011–12	20105
2012–13	19894
2013–14	18660
2014–15	19835
2015–16	48179
2016–17	87071
कुल	292823

स्त्रोतः मध्यप्रदेश वाणिज्य एवं उद्योग विभाग, भोपाल से एकत्रित किए गए समंक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं, कि पिछले 10 वर्षो में 292823 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की स्थापना हुई। एवं इन उद्योगों की संख्या में अंतिम दो वर्षो में आश्चर्यजनक बढोत्तरी हुई हैं।

शोध प्रविधीः प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन करने हेतु द्वितीयक समंको का प्रयोग किया गया हैं। तथा समंको को एकत्रित करने हेतु विभिन्न पत्र– पत्रिकाओं का, प्रकाशित व अप्रकाशित प्रलेखों, संबंधित पूर्व शोध पत्रों एवं एमएसएमई मंत्रालय की विभिन्न वेबसाइटों से जानकारियॉ एकत्रित की गई हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की भुमिकाः लघु उद्योगों का भारतीय अर्थव्यवस्था में अग्रणी स्थान हैं। महात्मा गॉधी के शब्दों में :– ' भारत का कल्याण उसके कुटीर उद्योग में निहित हैं। ' लघु उद्योग देश के आर्थिक विकास में महती आवश्यकता हैं। महात्मा गॉधी ने कहा था कि यदि देश को आर्थिक विकास की उच्च दर हासिल करवाना हैं, तो लघु उद्योगों का विकास करना होगा। लघु उद्योगों द्वारा वर्तमान में उन्नत वस्तुओं का उत्पादन होता हैं। तथा राष्ट्र द्वारा वस्तुओं के निर्यात में भी संतोषजनक वृद्धि हुई हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में लघु उद्योगों के महत्व को हम इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैंः–

1 निर्यात सृजन मेः सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों द्वारा वर्तमान में 8000 से भी अधिक उन्नत वस्तुओं का उत्पादन होता हैं। ये उत्पाद न केवल भारत में, अपितु संपूर्ण देशों में अपना स्थान रखते हैं। देश द्वारा उत्पादित वस्तुओं का विदेशों में निर्यात किया जाता हैं। इससे निर्यात में वृद्धि हुई हैं, तथा देश को विदेशी मुद्रा का अर्जन होता हैं। देश के निर्यात में ये उद्यम 40 प्रतिशत योगदान देते हैं।

2 रोजगार के अवसरों में वृद्धिः सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों द्वारा न्यूनतम पूंजी विनियोग द्वारा अधिकतम लोगों को रोजगार प्राप्त होता हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों ने देश में बेरोजगारी के प्रतिशत को कम किया हैं। व्यक्ति लघु उद्योग स्थापित करके स्वयं तो रोजगार प्राप्त करता ही हैं, साथ ही अनेक व्यक्तियों को भी रोजगार उपलब्ध करवाता हैं। मध्यप्रदेश राज्य में पिछले 10 वर्षो में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों से प्राप्त रोजगार इस प्रकार हैंः–

तलिका 2: मध्यप्रदेश में सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों में कार्यरत् कर्मचारियों की संख्या

वर्ष	सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों में कार्यरत् कर्मचारी
2007–08	46197
2008–09	46891
2009–10	41302
2010–11	42959
2011–12	46501
2012–13	47414
2013–14	45007
2014–15	51571
2015–16	194761
2016–17	363612
कुल	926215

स्त्रोतः मध्यप्रदेश वाणिज्य एवं उद्योग विभाग, भोपाल से एकत्रित किए गए समंक

अतः स्पष्ट हैं, कि पिछले 10 वर्षो में इन उद्योगों द्वारा 926215 लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ हैं। अंतिम दो वर्षो में सर्वाधिक रोजगार प्राप्त हुआ हैं।

3 औद्योगिक उत्पादन में हिस्साः देश में विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि हेतु लघु उद्योगों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। वर्तमान में वृहद उद्योगों के समान ही लघु उद्योगों ने भी उत्पादन के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया हैं। व्यक्तियों के कला एवं व्यक्तित्व को विदेशों में भी स्थान मिला हैं। हस्तशिल्प कला, बनारसी साडियों ने उत्पादन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बनाया हैं।

4 बडे उद्योगों के सहायकः लघु उद्योग पृथक रुप से अपना अस्तित्व तों रखते ही हैं, साथ ही वे वृहद उद्योगों को अपना निर्मित माल बनानें में कच्चा माल उपलब्ध करातें हैं। छोटे उद्योगों द्वारा निर्मित माल बडे उद्योगों के लिए अर्द्ध–निर्मित माल होता हैं। इस अर्द्ध–निर्मित माल के उपयोग द्वारा अपना निर्मित माल तैयार करते हैं। इस प्रकार लघु उद्योग बडे उद्योगों के सहायक की भूमिका भी अदा करतें हैं।

5 तकनीक ज्ञान की कम आवश्यकताः लघु उद्योगों को स्थापित करने हेतु कम से कम तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती हैं, क्योंकि इन उद्योगों में माल बनाने में मशीनों की आवश्यकता नहीं होती हैं। और यदि होती भी हैं, तो इनके संचालन में तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नही होती हैं। इस प्रकार लघु उद्योगों के लिए कम से कम तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता हैं, मशीनों का थोडा प्रशिक्षण देकर इन्हैं स्थापित किया जा सकता हैं।

इस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था को विकसित अर्थव्यवस्था बनानें में लघु उद्योगों का प्रबल स्थान हैं।

लघु उद्योगों हेतु सरकारी प्रयासः भारत में लघु उद्योगों के महत्व को समझते हुए सरकार द्वारा इस क्षेत्र को बढाने हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार द्वारा लघु उद्योगो के लिए कुछ वस्तुऍ आरक्षित की गई हैं। जिसका उत्पादन वृहद उद्योगों द्वारा नही किया जा सकता हैं। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा लघु उद्योग स्थापित करने हेतु उद्यमियों को वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करायी जाती हैं। इन्हैं वित उपलब्ध कराने हेतु प्रत्येक राज्य में राज्य वित्त निगम का स्थापना की गई हैं। ये निगम कम से कम ब्याज दर पर इन उद्यमियों को ऋण प्रदान करते

हैं। लघु उद्योगों संवर्धन एवं विकास हुतु सरकार द्वारा भारतीय लघु उद्योग वित्त निगम की स्थापना की गई हैं। इन निगमों की स्थापना का मुल उद्देश्य लघु उद्योगों का विकास करना हैं। इनके विकास द्वारा ही भारत को उन्नतशील देश बनाया जा सकता हैं।

उपसंहार

भारत में विशाल जनशक्ति की बहुलता हैं। इन जनशक्ति का प्रभाव देश में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही हैं। यदि जनसंख्या निष्क्रिय हैं, तो देश में बेरोजगारी के प्रतिशत में वृद्धि होगी। इसके विपरित यदि जनसंख्या सक्रिय हैं, तो देश का आर्थिक विकास अव य की संभव हैं। वर्तमान में वृहद उद्योगों ने संपूर्ण जगत में अपना वर्चस्व बनाए रखा हैं, परन्तु लघु उद्योगों के महत्व को भी नकारा नही जा सकता हैं। यदि हमें हमारें दे ा को विकसित करना हैं, तो हमें लघु उद्योगों का विकास करना होगा। भारत को संपन्न दे ा बनाने हेतु लघु उद्योगों को वृहद उद्योगों के समान महत्व देना होगा।

संदर्भ–ग्रंथ

1. मध्यप्रदे ा एक परिचय, राके ा गौतम, जितेन्द्र सिंह भदौरिया, टाटा मेक्ग्यू हिल एजुके ान प्राइवेट लिमिटेड
2. मध्यप्रदे ा संपूर्ण अध्ययन, डॉ. ाादाब अहमद सिद्दिकी, उपकार प्रका ान, आगरा
3. कुटीर एवं लघु उद्योग, रमा ांकर श्रीवास्तव
4. लघु सुदंर हैं, ुमाखेर इ. एफ. राधाकृष्ण, नई दिल्ली
5. क्वाटारली बुलेटिन ऑफ म.प्र. स्टेटिसटिक्स, भोपाल – त्रैमासिक
6. म.प्र. की सांखिकीय समीक्षा, भोपाल – त्रैमासिक.
7. www.msme.gov.in
8. www.dcmsme.gov.in
9. www.msmeindore.nic.in
10. www.mpindustry.gov.in
11. www.wiki.msme.mp.gov.in